RSM Date....../....../...... Page ...... Rangoli

सूरदास के काव्य मे लोक संस्कृति ?

"उतम पद कवि गंग के
उपमा को बलबीर
तुलसी अर्थ गम्भीर को
सूर तीन गुण धीर ॥"

महाकवि सूरदास कृष्ण भक्ति धारा के शिरोमणि कवि है। सूर साहित्य लोक जीवन का जीता जागता उदाहरण है। लोक जीवन का सतरंगा चित्रण सूर काव्य की अमर धरोहर है। सूरदास ब्रजमण्डल की आभीर संस्कृति के प्रतिनिधित कवि है और उनके काव्य मे लोक संस्कृति के विविध रुपो का प्रचुर मात्रा मे समावेश हुआ है।

लोक संस्कृति शब्द का अर्थ :- लोक शब्द का सामान्य अर्थ है :- जन या जनता। इस प्रकार संस्कृति शब्द का सामान्य अर्थ है :- किसी व्यक्ति का शिक्षण, संस्कार और अभ्यास। सांस्कृतिक जीवन तथा मानव का अनुभव अपने काम तो आता ही है साथ ही वे मानव के लिए बड़ा हितकारी होता है। इसी कारण संस्कृति सामाजिक रुप धारण कर लेती है। मानव जीवन को पोष्ट करने मे सहायक प्रक्रियाओ को संस्कार कहा जाता है। सूरदास के काव्य मे लोक संस्कृति के अनेक रुप देखने को मिलते है जो इस प्रकार है :-

1) **पुत्र जन्म संस्कार :-** आर्य संस्कृति मे पुत्र का जन्म पुनः का संस्कार समझा गया है। इन संस्कारो के

अवसर पर लोक जीवन में दिखाई देने वाले विशेष प्रकार के उल्लास को सूरदास जी ने अपने अनेक पदों में आकार स्वरुप प्रदान किया है।
यशोधा की नींद खुली तो एक पुत्र का मुख देखकर वह परम पुलकित हो उठी। नन्द ने आकर पुत्र का मुख देखा इससे उन्हें जितना सुख हुआ उसका वर्णन ही नही किया जा सकता।

" जागी महरि पुत्र मुख देख्यौ
पुलकि अंग उर मे न समाइ
गदगद कण्ठ बोल नाहि
आवे, हरषवन्त है नन्द बुलाई ॥"

2) छठी व्यवहार :- शिशु के जन्म के छठे दिन सूतीक ग्रह की पवित्रता तथा स्नान आदि करवाया गया।
इस दिन जो उत्सव मनाया जाता है उसे छठी कहा जाता है।
इस दिन जच्चा - बच्चा स्नान करते है। समस्त घर लीप पोंच कर साफ किया जाता है।
सूरदास जी ने इसी छठी आचार का भी वर्णन किया है।
छठी का आचार 'सोहिला' लोक गीत के गायन से आरम्भ होता है।

॥ गौरि गनेसर जीनउ (हो) देवी सारत तीहि ॥

सूरदास जी के छठी वर्णन के इस पद मे लोक संस्कृति अपनी पूरी सजीवता के साथ उभरी है।

Scanned with OKEN Scanner

3) नामकरण :- शिशु के जन्म के दूसरे या बारवे दिन उसका नाम रखने के लिए जो संस्कार किया जाता है उसे नामकरण कहा जाता है। इस दिन पूजन किया जाता है और शिशु को नए वस्त्रो और आभूषणो से सुसज्जित (सजाया) जाता है।
सूरदास जी ने जिस पद मे श्री कृष्ण के नामकरण का वर्णन किया है उनके अनुसार उस दिन गर्ग त्रिऋषि नन्द के घर आते है। गर्ग ज्योतिष विद्या के अनुसार जन्मकाल की गणना करके कृष्ण के सारे भावी लक्षण नन्द को सुनाते है।

"आदि सनातम पर
प्रभु घट-घट अन्तरजामी
सो तुम्हरे अवतरे आनि के
सूरदास के स्वामी।"

4) लोक विश्वास :- लोक विश्वास का सीधा सम्बन्ध मानव अन्तर से होता है। यही कारण है कि एक व्यक्ति का विश्वास प्रायः सामाजिक विश्वास का रूप ग्रहण कर लेता है। लोक विश्वासो मे पौराणिक विश्वास, धार्मिक विश्वास, सामाजिक विश्वास तथा अंधविश्वास की गणना की जाती है। सूरदास ने अनेक प्रकार के ऐसे विश्वासो का वर्णन अपने पदो मे किया है।

5) अन्न-प्राषण :- कृष्ण के छः मास के होने के कुछ दिन रहने पर शुभ मुहूर्त मे अन्न-प्राषण के संस्कार का वर्णन है। इस दिन स्त्रियाँ मंगल गीत गाती है

RSM Date....../....../........
Page .... Rangoli

3.) नामकरण :- शिशु के जन्म के दूसरे या बारवे दिन उसका नाम रखने के लिए जो संस्कार किया जाता है उसे नामकरण कहा जाता है। इस दिन पूजन किया जाता है और शिशु को नए वस्त्रो और आभूषणो से सुसज्जित (सजाया) जाता है।

सुरदास जी ने जिस पद मे श्री कृष्ण के नामकरण का वर्णन किया है उनके अनुसार उस दिन गर्ग ऋषि नन्द के घर आते है। गर्ग ज्योतिष विद्या के अनुसार जन्मकाल की गणना करके कृष्ण के सारे भावी लक्षण नन्द को सुनाते है।

"आदि सनातम पर
प्रभु घट-घट अन्तरजामी
सो तुम्हरे अवतरे आनि के
सूरदास के स्वामी।"

4.) लोक विश्वास :- लोक विश्वास का सीधा सम्बन्ध मानव अन्तर से होता है। यही कारण है कि एक व्यक्ति का विश्वास प्राय: सामाजिक विश्वास का रूप ग्रहण कर लेता है। लोक विश्वासो मे पौराणिक विश्वास, धार्मिक विश्वास, सामाजिक विश्वास तथा अंधविश्वास की गणना की जाती है। सूरदास ने अनेक प्रकार के ऐसे विश्वासो का वर्णन अपने पदो मे किया है।

5) अन्न-प्राशण :- कृष्ण के छः मास के होने के कुछ दिन रहने पर शुभ मुहूर्त मे अन्न-प्राशण के संस्कार का वर्णन है। इस दिन स्त्रियाँ मंगल गीत गाती है।

Scanned with OKEN Scanner

नन्द और यशोदा का नाम लेकर कलोल भी करती है। नन्द स्वर्ण थाल मे खीर भरकर उसमे घृत और मधु मिलाते है। जब यह खीर कृष्ण को दिखाई जाती है तो वह मुँह बिगाड़ते है।

6) वर्षगांठ :- इस दिन कृष्ण को उबटन लगाकर स्नान कराया जाता है। आँगन का लीपना, चौक पूरना, वाद्य बजाना, अक्षत धुन बोनना, तथा मंगल गान आदि होता है।

7) विवाह :- यद्यपि सूर ने राधा और कृष्ण का गन्धर्व विवाह करवाया है। तथापि वह सब बाते इसमे वर्णित है जो विवाह के अवसर पर सूर के समय प्रचलित थी और आज तक चली आ रही है जैसे :-

* मोर धारण करना
* निमंत्रण देना
* मण्डप तैयार करना
* नाच गाना
* वेद मन्त्रो उच्चारण
* पानी ग्रहण और
* कंकन खेलना आदि।

सूर ने जिन संस्कारो का वर्णन 'सूरसागर' में किया है वह सब व्रज की रीति और पद्धति के अनुसार है।

8) पूजा-व्रत और स्नान :- व्रज की संस्कृति मे पूजा-व्रत और स्नान आदि का भी महत्व है।

सूरदास ने गौरी पूजा, शिव पूजा, सूर्य पूजा, व्रत रखना और यमुना स्नान आदि का वर्णन राधा और गोपियो के सम्बन्ध मे किया है। नन्द द्वारा शालीग्राम की पूजा और एकादशी व्रत रखने का भी वर्णन है। बलराम की तीर्थ यात्रा का भी विवरण सूरदास ने किया है।

9) उत्सव :- 'सूरसागर' मे गोवर्धन पूजा का समारोह उत्सव के रूप मे वर्णन किया गया है। भारत मे प्रचलित उत्सव और त्योहारो का लोगो की धार्मिक भावनाओ के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। भारत के कुछ त्योहार तो ऋतु परिवर्तन के प्रतीक है और कुछ पौराणिक कथाओ के। बसंत पंचमी, श्रवाणी, शरद पूर्णिमा आदि त्योहार ऋतु परिवर्तन के अन्तर्गत आते है। शिवरात्रि, विजयदशमी आदि पौराणिक अख्यानो पर आधारित है। 'सूरसागर' मे नवरात्रो का भी उल्लेख है। गोवर्धन की पूजा के पश्चात् दीप माला का भी वर्णन है और साथ ही रास लीला का उल्लेख भी किया गया है।

10) लोक साहित्य :- लोक साहित्य की मुख्य विशेषता यह है कि उसके विविध अंगो मे मनुष्य के रहन-सहन, आचार-विचार, खान-पान, रीति-रिवाज, धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक स्तर की यथार्थ अभिव्यक्ति होती है। लोक साहित्य के अन्तर्गत लोक गीत, लोक कथा, लोक गाथा और लोक नृत्य आदि आते है। लोक साहित्य मे संस्कृति का सर्वोत्म रूप अभिव्यक्त होता है।

RSM Date ..../..../........ Page .... Rangoli

11) **लोक गीत और लकोक्तियाँ :-** परम्परागत रूप से जन जीवन मे प्रचलित होने वाले वह मौलिक गीत जिनके रचयिता लोक कवियो की छाप नही मिलती लोक गीत संज्ञा से अभिहित किए जाते है। लोक गीतो मे जन जीवन के आर्थिक, धार्मिक तथा सामाजिक पक्ष की झाँकी भी मिलती है। यदि हम सूरदास को लोक कवि कहे तो विशेष आपत्ति जनक न होगा। सूरदास ने जन्म, नामकरण, विवाह आदि संस्कारो के अवसर पर गाए जाने योग्य गीत लिखे है।

काव्य को आकर्षक और चमत्कार पूर्ण रूप प्रदान करने के लिए लकोक्तियों का विशेष महत्व होता है। उनके काव्य मे अनेक लकोक्तियों का प्रयोग हुआ है। जिनमे से कुछ उदाहरण निम्नलिखित है :-

1.) छोटा मुँह बड़ी बात कहत, अवही मरि जैहै।
2.) ज्यो गजरात काज के आरे, औसर दसन दिखावत।

निष्कर्ष :- यदि सूर साहित्य की अन्तर गहराई मे प्रविष्ट होकर उसका मंथन किया जाए तो उसमे से लोक संस्कृति के अनेक बहुमूल्य रत्न उपलब्ध हो सकेगे। सूर साहित्य लोक संस्कृति का वह रंगमंच है जिस पर लोकगीत, लोकगाथाएं, मुहावरे आदि विविध पात्रो के रूप मे अपनी-अपनी भूमिका निभा रहे है। इस प्रकार सूरदास तद्युगीन लोक जीवन और लोक संस्कृति के प्रतिनिधि कवि है।

Scanned with OKEN Scanner